माता का आँचल

शिवपूजन सहाय

प्रदत्त कार्य-1 : व्याकरण

विषय : आंचलिक शब्दों का चयन और उनके अर्थ बताना।

उद्देश्य :

- भाषा ज्ञान में अभिवृद्धि करना।
- आंचलिक शब्दों की सहज, स्वाभाविक स्थिति को समझाना।
- आंचलिक शब्द प्रयोग से वातावरण सृष्टि होती है, स्पष्ट करना।
- शब्दों के अर्थ, प्रयोग, विविधता आदि का ज्ञान कराना।
- विद्यार्थियों में जिज्ञासा की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।
- भावग्रहण क्षमता का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक आंचलिक शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग को पाठ के आधार पर स्पष्ट करेगा।
2. प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए कक्षा को दो समूहों में विभक्त कर देगा।
3. एक समूह शब्द बोलेगा दूसरा पक्ष उसका अर्थ बताएगा।
4. यह क्रम अदल-बदल सकता है। यानी पूछने और बताने की प्रक्रिया एक पक्ष से दूसरे पक्ष में बदली जा सकती है।
5. इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।
6. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- शब्दों का उच्चारण
- अर्थ का स्पष्टीकरण
- उच्चारण की स्पष्टता

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वयं भी मूल्यांकन आधार निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- स्पष्ट उच्चारण व सही अर्थ बताने वाले विद्यार्थियों की प्रशंसा की जाए।
- सक्रिय प्रतिभागिता न लेने वाले विद्यार्थियों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : बाल मंडली के खेल।

उद्देश्य :

- बचपन के खेलों का महत्व समझाना।
- खेलों द्वारा उत्पन्न मेलजोल, परिचय, प्रगाढ़ता की ओर ध्यान दिलाना।
- बचपन की प्रत्येक प्रक्रिया की सूक्ष्म पहचान और योगदान को जानना।
- हृदय में कोमल भावनाओं को जगाना।
- शारीरिक सक्रियता व स्वास्थ्य के लिए आवयकता बताना।
- मिलजुलकर कार्य करने की प्रेरणा देना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा के वातावरण को सजीव एवं प्रसन्नतादायक बनाने के लिए कक्षा के कुछ विद्यार्थियों से बचपन में बाल मंडली द्वारा किए जाने वाले खेलों का प्रदर्शन कराएगा।
2. तालियाँ बजा बजाकर 'पोशम पा भई पोशम पा' इत्यादि गाना गाकर खेलना और वैसा ही अभिनय करना।
3. जमीन पर लकीरें खींचकर स्टापू खेलना।
4. गुड्डे-गुड़िया का खेल खेलना।
5. घर-घर खेलना।
6. डॉक्टर और मरीज का खेल।
7. अध्यापक बनकर औरों को पढ़ाना।
8. रेत का घर बनाना और तोड़कर भाग जाना।
9. अध्यापक कक्षा में कुछ समूह बनाकर प्रत्येक समूह से एक एक बचपन का खेल करा सकता है।

10. कक्षा में एक आनंददायक वातावरण तैयार होगा जिससे पाठ समझने में सुगमता होगी।

11. अध्यापक मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देगा।

12. यह प्रक्रिया एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगी।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सहज स्वाभाविक अभिनय
- संवाद–प्रस्तुति
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक अन्य मूल्यांकन आधार भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- सभी विद्यार्थियों की प्रतिभागिता के लिए सराहना की जाए।
- सुस्त एवं शिथिल विद्यार्थियों को आनंद लेकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य–3 : वाद विवाद

विषय : 'आज की शिक्षा बचपन को निगल रही है'

उद्देश्य:

- आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धा की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- बचपन की कोमलता पर पुस्तकों का व विद्यालय का दबाव समझाना।
- विषय के पक्ष और विपक्ष में बोलने की क्षमता का विकास करना।
- तार्किकता एवं प्रभावशीलता उत्पन्न करना।
- वाचन कौशल का विकास।
- प्रत्युत्पन्नमति का गुण विकसित करना।
- धैर्य एवं सहनशीलता के गुण का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा में विषय का स्पष्टीकरण करेगा।

2. प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए दो समूह बनाएगा पक्ष और विपक्ष।

3. दोनों समूहों को सोचने के लिए पांच मिनट का समय दिया जाएगा।

4. उस समय अध्यापक सभी विद्यार्थियों को भाग लेने के लिए प्रेरित करेगा।

5. अध्यापक 20–25 मिनट के समय में वाद विवाद कराएगा।

6. प्रत्येक समूह के एक–एक वक्ता को बोलना अनिवार्य होगा

7. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सटीक तर्क
- विषय से सम्बद्धता
- प्रस्तुति में प्रवाह
- उच्चारण

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वयं भी मूल्यांकन आधार निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली ढंग से अपने पक्ष में तर्क देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- संकोची व चुप रहने वाले विद्यार्थियों को आगे आने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य–4 : समूह चर्चा और प्रस्तुति

विषय : ''बचपन में दुत्कार, जीवन हो बेकार। बचपन में दुलार, जीवन करे सत्कार।।''

उद्देश्य :

- बचपन में मां–बाप के प्यार का महत्व बतलाना।
- बचपन में अगर प्यार न मिले तो जीवन भटक जाता है, यह समझाना।
- वात्सल्य और लाड़ दुलार का भावनात्मक महत्व समझाना।
- प्यार की कमी असुरक्षा और अपराध को जन्म देती है।
- मिलजुलकर कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास।

- चिंतन–मनन की क्षमता को उद्दीप्त करना।
- वाचन एवं श्रवण कौशलों की अभिवृद्धि।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक विषय को स्पष्ट करेगा और समझाएगा कि बचपन में मां बाप का प्यार हर बच्चे का अधिकार है।
2. कक्षा को समूहों में विभाजित कर देगा।
3. प्रत्येक समूह को परस्पर चर्चा के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
4. अध्यापक उस अंतराल में सभी विद्यार्थियों की चर्चा को ध्यानपूर्वक उनके समूह में जाकर सुनेगा।
5. तत्पश्चात् 15–20 मिनट का समय प्रत्येक समूह के प्रस्तुतीकरण को सुनने के लिए दिया जाएगा
6. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु का विवरण
- सटीक तर्क एवं प्रमाण
- उच्चारण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार मूल्यांकन आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- तर्क द्वारा अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों की सराहना अवश्य की जाए।
- सभी प्रतिभागियों की प्रतिभगिता अनिवार्य हो, किसी न किसी स्तर पर अवश्य भाग लें।
- सामान्य से कम स्तर की प्रस्तुति देने वाले विद्यार्थियों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित करें।

प्रदत्त कार्य–5 : संकलन करना।

विषय : लोक कथाएं

उद्देश्य :

- लोक जीवन के स्वरूप से परिचित कराना।

- लोक संस्कृति का महत्व समझाना।
- क्षेत्रीय संस्कृति, भाषा, रहन सहन की विविधता से परिचित कराना।
- लोक कथाओं की मिठास और मिट्टी से जुड़ाव अनुभव कराना।
- लोक भाषा, आंचलिकता की सहजता व अपनत्व से जोड़ना।
- खोजबीन, जिज्ञासा एवं संकलन के गुणों का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा में विषय को अच्छी तरह स्पष्ट कर देगा।
2. कक्षा को समूहों में बांट देगा।
3. प्रत्येक समूह को संकलन के लिए तीन चार दिन पहले बता दिया जाएगा।
4. निर्धारित तिथि को प्रत्येक समूह अपनी संकलित लोक कथा को कक्षा में प्रस्तुत करेगा।
5. प्रस्तुति के लिए प्रत्येक समूह को 5-5 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- लोक कथा का विवरण
- कथा की रोचकता
- क्षेत्रीय प्रभाव
- प्रभावशाली वाचन
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधारों में परिवर्तन के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी प्रस्तुति की सराहना अवश्य की जाए।
- निम्नस्तरीय प्रस्तुति के लिए सुधार की संभावना समझाते हुए प्रोत्साहित किया जाए।